R- एक तुम जो मिला सारी दुनियॉ मिली .....। ओमशांति। यह रिकार्ड है जो बंधन से मुक्त हो सम्बंध में आते हैं। इस समय है माया का बंधन। इसको ही आसुरी बंधन कहा जाता है। अब तुम्हारा है ईश्वरीय सम्बंध। बंधन में दुःख , सम्बंध में सुख है। इसलिए गाते हैं दुःख के बंधन काट हमको सुख के सम्बंध में ले जाओ। भक्तिमार्ग में भक्तों की पुकार होती है। भक्त अर्थात् भगवान को याद करने वाले। परंतु दुनियॉ में एक भी भक्त नहीं जिसको भगवान का पता हो। इसलिए आधा कल्प से भक्तिमार्ग चलता ही आता है। साधु भी साधना करते हैं भगवान से मिलने। भगवान तो एक है। बाप से मिलने से वर्सा मिलता है। हद के बाप का वर्सा तो है। फिर भी बेहद के बाप को याद करते हैं ; क्योंकि हद के वर्से में दुःख है। बेहद के वर्से में है सुख। यह भी तुम जानते हो तुम्हारे बंधन काटने लिए बाप सन्मुख बैठे हैं। गाया भी जाता है दुःख हर्ता , सुख कर्ता। दुःख हर्ता , शांति कर्ता नहीं कहते। सब शांति में चले जाएं फिर तो सृष्टि ही ना रहे। इसलिए दुःख हर्ता , सुख कर्ता कहा जाता है। सबको सुख देते हैं। मुक्ति पाते हैं। जपते मुक्ति के लिए। सिर्फ मुक्ति कहें वह तो जैसे मोक्ष हो जाए। मुक्ति के बाद फिर जीवनमुक्ति जरूर है। जीवनमुक्त है सुख का सम्बंध जबकि आत्माएं सतोप्रधान हैं। यहॉ तुम आए हो दुःख के बंधन से छूटने। दूसरी तरफ दुःख के सम्बंध में जुटते जा रहे हैं। कर्मबंधन के हिसाब को चुक्तू करना पड़ता है। नई दुनियॉ में तो कोई दुःख होता नहीं। पहले है सुख का सम्बंध। बाद में फिर दुःख का सम्बंध शुरू होता है। सुख–दुःख का खेल सबके लिए है। तुम बहुत सुख तो बहुत दुःख देखते हो। वो थोड़ा सुख , थोड़ा दुःख देखते हैं। भारत जो हैवेन सालवेंट था अब हेल इनसालवेंट है। सबसे नया था। अभी सबसे पुराना है। बहुत दुःख देखते हैं। अभी तक भी बहुत दुःख है। इन दुःखों से छुड़ाने लिए ही बाप को पुकारते हैं। उनको पिया भी कहा जाता है। बेहद के पिया को पुकारते हैं। ऐसा कोई नहीं होगा जिसके दिल से यह ना निकले कि हाय भगवान , ओ गॉड। कितना पुकारते हैं। अब तुम समझते हो उनको दुःख है तब पुकारते हैं। अभी श्रीमत पर तुम पुरुषार्थ कर रहे हो सुखधाम जाने का। बाप कहते हैं पॉच2 हजार वर्ष बाद मैं आता हूँ। तुम्हारी बुद्धि में अब ज्ञान पूरा है। आदि से अंत तक त्रिकालदर्शी हुए ना। तीनों लोकों को जानते हो। मूलवतन में हम आत्माएं शांत में रहती हैं हम असल उस निर्वाणधाम के वासी हैं। फिर प्रकृति के स्वधर्म में आने से इन ऑर्गन्स द्वारा पार्ट बजाते हैं। सुख और दुःख का पार्ट बजाते हो आदि से अंत तक। तुम ऑलराउन्डर हो। सारे चक्र में तुम्हारा पार्ट है। तुम ही 84 जन्म लेते हो। बाकी वैराइटी (पार्टधारी) तो ढेर हैं। गिनती करने वाला तो कोई है नहीं। ऐसे ही धुक्का लगाय 84 लाख जन्म कर देते हैं। अभी तुम जानते हो 84 जन्म भी कौन और कैसे लेते हैं। सिक्ख लोग वा आर्यसमाजी , बौद्धी आदि 84 जन्म नहीं लेंगे। 84 जन्म तो पूरे तुम्हारे हैं। तुम बाप को जानते हो। इसलिए लिखते हो गीता का भगवान कौन? ज्ञान सागर पतित–पावन हैविनली गॉडफादर शिव वा सर्व गुण सम्पन्न .....हैवेन का पहला प्रिंस श्रीकृष्ण? यह पहेली तो बहुत सहज है। वो है हैविनली गॉडफॉदर अर्थात् हैवेन का रचयिता। और वो है हैवेन का प्रियं रचना। वो निराकार वो साकार। अब भगवान कौन? रचयिता की महिमा ही न्यारी है। इसलिए बाबा ऐसे2 प्रश्न छपवा रहे हैं। वो मनुष्यों की बुद्धि में आए। तुम ही जज करो गीता का भगवान कौन? निराकार भगवान पुनर्जन्म रहित है और फिर हैविन (स्वर्ग )की स्थापना करने वाला है। बाप बैठ समझाते हैं तुम सो ल.ना. थे , फिर 84 जन्म लिए , अब फिर तुम सो ल.ना. बनते हो। सहज राजयोग सिखलाने वाला है ही एक बाप। बाकी है सीखने वाले बच्चे। तो यह युक्ति से लिया जाता है। हैविनली गॉडफॉदर है हैविन स्थापन करने वाला और वह है हैविनली प्रिंस। बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा लेने वाला। कितनी सहज बात है। पत्थर बुद्धि मनुष्यों को पावन बनाने में कितना टाइम लगता है। चलते2 फिर पत्थर बुद्धि बन पड़ते हैं। इसमें मुख्य है ही पवित्र रहने की बात। एक से बुद्धियोग लगाना। घर–बार नहीं छोड़ना है। वो तो हद के सन्यासी छोड़ते हैं। तुम्हारा यह है बेहद का सन्यास। वो फिर भी रहते तो पुरानी दुनियॉ में हैं ना। तुमको पुरानी सारी दुनियॉ को भूलना

पड़ता है। हमको हद और बेहद से पार जाना है शांतिधाम में। वहॉ तो शांति ही शांति है। बाकी हद और बेहद का सुख यहॉ है। अब तुमको हद और बेहद से पार जाना है शांतिधाम। हम आत्माओं का वो घर है। वहॉ आत्मा कोई पार्ट नहीं बजाती है। आर्गन्स ही नहीं है। फिर ड्रामानुसार तुम्हारा सतयुग का पार्ट इमर्ज होता है जो तुमने पार्ट बजाया है। कल्प वो ही बजाते हो। ये बातें सिवाय बाप के और कोई समझाय नहीं सके। सुख का सम्बन्ध और दुःख का बंधन भी तुम जानते हो। वो है आसुरी सम्बंध , से ईश्वरीय। तुमको रहना भी आसुरी सम्बंध में है ; क्योंकि सब तो ईश्वरीय सम्बंध में इकट्ठे रह ना सके। इतने सब कहॉ रहेंगे? फिर तो सन्यासियों मुआफिक हो जाए। कुटुम्ब को कहॉ ले आएंगे? वृद्धि को पाते ही रहते हैं। पहले2 बहुत छोटा घर था। तीन पैर पृथ्वी का था। तुम छोटी कोठरी में आते थे। जैसे बाबा कहते हैं ना घर में गीता पाठशाला खोलो। वैसे पहले था। पूछते हैं शुरू कैसे हुआ? बाबा बताते हैं ऐसे शुरू हुआ। तीन पैर पृथ्वी के थे। फिर बाद में बड़े मकान लिए। 4 मकान लिए बच्चे भी बहुत आ गए। भट्ठी बनी। 4 मोटरें , बस आदि भी थी। इसलिए बाबा बच्चों को भी कहते हैं तीन पैर पृथ्वी के लेकर पाठशाला खोलो। फिर तुम तो सारे विश्व के मालिक बनते हो। गाते भी हैं ईश्वर विश्व का मालिक है। परंतु अब तुम समझते हो विश्व सृष्टि को कहा जाता है। बाप तो मालिक बनता नहीं। बाप तो आते ही हैं खिदमत करने। जब सारे यूनिवर्स में सब दुःखी होते हैं। यह है गॉडली यूनिवर्सिटी । सारी यूनिवर्सिटी के लिए यह कॉलेज है। सबका सद्गति मिलती है। दुर्गति में भी यह जाते हैं ना। सूक्ष्मवतन , मूलवतनवासी तो दुर्गति में नहीं जाते हैं। तो इस यूनिवर्सिटी से सारे यूनिवर्स का कल्याण होता है। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। सब मनुष्यों की गति सद्गति करने लिए बाप कहते हैं मुझे आना पड़ता है। नहीं तो पावन कैसे बनेंगे? रावण भी .....माया बड़ी दुस्तर है। आधा कल्प तुमको दुःख में ले जाती है। यह खेल है। बॉक्सिंग में तो दोनों समर्थ चाहिए ना। आधा कल्प जीत , आधा कल्प हार होती है। यह बॉक्सिंग बेहद की है। इनको युद्ध स्थल कहा जाता है। इसमें माया रावण को जीतना पड़ता है। कल्प पहले भी तुमने जीत पाई थी। तुम देख रहे हो कौन2 निकलते हैं। कोई कहते हैं बाबा क्रोध आ जाता है। यह तो भूत है। दान में देकर वापिस लेंगे तो और ही बहुत सतावेंगे। तुमने 5 विकार दान में दिए हैं। इनका सन्यास करना है। बाकी घर–बार छोड़ भाग जाना यह तो कायरपना है। बाप समझाते हैं 64 जन्म तुमने गोते खाए हैं। अब एक जन्म पवित्र बनो। इसमें आमदनी बहुत है। बड़ा वर्सा मिलता है। जबरदस्त प्राप्ति होती है। दुश्मन सामने खड़ा है। मल्लयुद्ध होती है ना। कंस और कृष्ण का मल्लयुद्ध भी शास्त्रों में दिखाया है। वास्तव में यह मल्लयुद्ध है इस समाज की। कहॉ की बात कहॉ ले गए हैं। कृष्ण की कंस साथ युद्ध कैसे होगी। यह तो रावण माया है। कृष्ण की आत्मा अंतिम जन्म में है माया से युद्ध कर श्रीकृष्ण बनते हैं। कितनी गुप्त बातें हैं जो बाप ही बच्चों को समझाते हैं। अब समझदार बनना है। बाप कहते हैं लाडले बच्चे तुम कितने समझदार थे। अब बेसमझ बन पड़े हो। भारत कितना सिरताज था। कितने साहूकार थे। सूर्यवंशियों की कोई दरबार देखी , कितने हीरे , जवाहरों के महल देखे। यहॉ भी दरबारें होती थीं। आपस में प्रिंस–प्रिंसेज मिलते थे। नम्बरवार बैठते थे। बुद्धि से काम लो। वहॉ आपस में मिलते होंगे तो उन्हों की दरबार कैसी होगी? रात की बातें देखने में नहीं आती। रोशनी ही रोशनी रहती है। साइंस काम में तो आती है ना। गुम नहीं हो जाती है। सूर्यवंशी की तो बात मत पूछो। तुम कितने सौभाग्यशाली हो। जो तुम ब्राह्मणों का हीरो–हीरोइन का पार्ट है। तुम बेहद का राज्य लेते हो। फिर .....हो। इसलिए शिवशक्ति सेना का गायन है। वन्दे मातरम। जो बाबा की श्रीमत पर ज्ञान कलश धारण कर भारत को स्वर्ग बनाने निमित्त बनते हैं। स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। वो फिर कहते नर्क का द्वार

खोलते हैं। वो है शंकराचार्य, यह शिवाचार्य। यह कहते मैं जगत का सुधार करता हूँ। वो शंकराचार्य भी 4 हो गए हैं। इनका भी आपस में झगड़ा रहता है। यहाँ हंगामे की कोई बात ही नहीं। गीत में सुना ना। कहते हैं आप मिले तो सारी दुनियाँ मिली। सब मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं। कोई अप्राप्त वस्तु नहीं। फर्स्ट क्लास वहाँ चीजें होती हैं। उनसे उँची होती नहीं। सर्व मनोकामनाएं पूरी होती हैं। स्वर्ग में सब सुख मिल जाते हैं। आगे यह टेलीफोन , बिजली , मोटरें आदि थोड़े ही थीं। यह अभी निकली हैं। वहाँ तो साइंस बहुत काम देती है। अभी भी विलायत में सात रोज में मकान तैयार कर देते हैं। यहाँ के मनुष्यों की बुद्धि तमोप्रधान है। वहाँ इनकी भेंट में रजोप्रधान कहेंगे। अकल सारा बाहर से आता है। भल यह सीख कर करते हैं। परंतु इतना थोड़े ही सीख सकेंगे। मिलिट्री राज्य ने क्या कर दिया है। कितनी महँगाई है। महाभारत की कहानी है। महाभारत लड़ाई क्यों लगी? क्या हुआ यह कोई भी नहीं जानते। तुम सब जानते हो। दुनियाँ को बदलना होता है। इसलिए यह महाभारत लड़ाई है तुम्हारी बुद्धि कितनी खुल गई है। कैसे युद्ध के मैदान में खड़े हैं। माया सामना करती है। बाप कहते हैं पूरा योग लगाओ। तुम भी निर्वाणधाम के रहने वाले हो। जैसे बाप वैसे तुम। बाप तुमको विश्व का राज्य देते हैं। उनके बदले दिव्य दृष्टि की चाबी अपने पास रखते हैं। कहते हैं यह हमारे काम की है। भक्तिमार्ग में भी तुमको खुश करना होता है। बाकी यह किसको देता नहीं हूँ। तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ। यह कम बात थोड़े ही है। दिव्य दृष्टि की चाबी भी कोई कम थोड़े ही है। खेल कैसा है। जो अच्छी रीति समझते हैं , अंदर खुशी में रहते हैं। जन्माष्टमी पर भी समझाया कृष्ण जयन्ति नहीं। यह परमपिता परमात्मा की जयन्ति ही गाई जाती है। पहले कृष्ण जयन्ति मनाते हो , शिव जयन्ति कहाँ गई? पहले शिव जयन्ति हो तब तो कृष्ण का जन्म हो। शिव जयन्ति बाद है कृष्ण की। शिवबाबा ही भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कहते हैं कल्प के संगम पर .....महाभारत लड़ाई भी है। तब नर्क का विनाश , स्वर्ग की स्थापना हो। शिवबाबा शिवालय स्थापन करते हैं। रावण वैश्यालय बनाते हैं। जिस बाप शिव की महिमा है उनकी जयन्ति मनाते नहीं। कृष्ण की जयन्ति धूमधाम से मनाते हैं। जिससे कृष्ण ने पद पाया उनका किसको पता नहीं। वास्तव में शिव जयन्ति ही मुख्य है। बाकी तो मनुष्य जन्म लेते रहते हैं। जो पूज्य देवताएं थे वो ही फिर पुजारी बनते हैं। तुम्हारी बुद्धि में सारा राज है। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाबा तुमको समझाते हैं तुम फिर औरों को समझाते हो। प्रिंसिपल आदि को भी समझाना चाहिए। यह जो स्कूलों में हिस्ट्री–जॉग्राफी समझाई जाती है यह तो अधूरा है। मूलवतन , स्थूलवतन , सूक्ष्मवतन इन सबका राज समझना है। तुम इनको जानते नहीं। बाकी अंग्रेजों , मुसलमानों और की हिस्ट्री–जॉग्राफी ले बैठे हो। बेहद की हिस्ट्री–जॉग्राफी बेहद का बाप समझाते हैं। हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। स्वर्ग का प्रिंस–प्रिंसेज बनना है। तो आओ हम तुमको बतावें यह हेवन के प्रिंस–प्रिंसेज कैसे बनें। उन्हों को यह वर्सा कैसे मिला? यह सूर्यवंशी डिनायस्टी कैसे सीपन हुई? किसने सीपन किया? अगर यह नॉलेज ना तो तुम फिलासाफर काहे के? यह तो इजायत हुई। इस सर्जन की भेंट में वह क्या करते हैं? और ही रोग बीमारी आदि बढ़ जाती है। रुहानी सर्जन आत्माओं को इन्जेक्शन लगाते हैं। तो सब निरोगी बन जाते हैं। तुम तो इजामत करते हो। समझाने की युक्ति चाहिए। यह जज आदि भी क्या जजमेंट करते हैं। धर्मराज बाबा तो बिल्कुल एक्युरेट है। उनके उपर कोई है नहीं। यहाँ तो एक–दो के उपर हैं। सच्चा2 धर्मराज तो एक है। बाकी सब हज्जाम ही ठहरे। आगे चल तुम सबको कहेंगी। सन्यासियों को भी कहेंगी तुमने तो परमपिता सर्व्यापी कह सबका बेड़ा गर्क कर दिया है। तब बाप कहते हैं इन सबको छोड़ो। मैं तुमको शिवालय में ले जाता हूँ। सन्यासी लोग तो अभी सब अंदर घुस आए हैं। कहते हैं हमने घरबार छोड़ा। करोड़ो रुपया अंदर इकट्ठा कर रहे हैं। तो यह सन्यास हुआ? हम तो ..... .....क्या बनते है। अच्छा, मीठे2 सतोप्रधान झदार बच्चों प्रति यादप्यार गुडमार्निंग।